3

कविता की पढ़ाई*

भाषा की जादुई दुनिया में प्रवेश करते ही बच्चों का तरह-तरह के शब्दों से खेलना शुरू हो जाता है। दुनिया का कौन-सा ऐसा बच्चा होगा जिसने अपने बचपन में शब्दों को उलट-पुलट कर मज़ा नहीं लिया होगा या फिर तरह-तरह की तुकबंदियाँ नहीं की होंगी। बच्चों का कविता से संपर्क यहीं से शुरू हो जाता है। माँ की लोरियाँ, उनके खुद के खेलगीत, एक-दूसरे से सुने गीतों में खुद से कुछ जोड़ देना, यानी कि कविता की दुनिया किसी भी बच्चे के लिए नयी नहीं है।

चंदा मामा दूर के
पुए पकावें दूर के
आप खाएँ प्याली में
मुनिया को दें थाली में

या फिर
टेसू राजा बीच बाज़ार
खड़े हुए ले रहे अनार
इस अनार में दाने कितने
कंबल में हैं खाने जितने

या फिर
इक छोटी किश्ती मेरे पास
पानी में तैराई-

या फ़िर
हरा समंदर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली कितना पानी

भारत की उत्तर दिशा हो या दक्षिण, पूरब हो या पश्चिम, कहीं भी चले जाइए, कविताओं की दुनिया किसी भी बच्चे के लिए अपरिचित नहीं होगी। फिर क्या कारण है कि बहुत ही प्यारी और अपनी-सी लगने वाली कविताएँ स्कूली ज़िंदगी में आते ही बोझ-सी लगने लगती हैं? कविता के खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, चिड़िया, हाथी, चूहा, शेर, तितली, चाँद-सितारे सब कुछ बहुत ही अनजाने और अपरिचित से लगने लगते हैं। सच कहा जाए तो किसी एक समय में मज़े के सागर में डुबकियाँ दिलाने वाली कविता, स्कूल में भाषा की घंटी में गले की फाँस बन जाती है। कभी इस तरफ़ ध्यान देने की कोशिश की है क्या? जिस किसी ने भी इसका उत्तर खोजने की कोशिश की होगी उसे यही उत्तर सूझा होगा कि कहीं न कहीं कविता पढ़ाने के तरीकों में ही कोई चूक हो रही होगी। जो भी ऐसा सोच रहे हैं वे निश्चित रूप से बात की तह तक पहुँच गए हैं। भाषा का अध्यापक होने के नाते हमें समझना होगा कि छोटी कक्षाओं में कविताओं को कैसे पढ़ाया जाए? जिससे कविता के

* यह लेख राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग-2* से लिया गया है।

साथ उनका पुराना मज़ेदार रिश्ता कभी टूटे नहीं, बल्कि उसमें और भी प्रगाढ़ता आए और वे कविता पढ़ने के साथ-साथ खुद भी कविता लिखने लगें।

दरअसल कविता के साथ कक्षाओं में हो क्या रहा है कि उसके शब्दों के लुभावनेपन, उसकी लय और ध्वनि को एक किनारे कर कविता को समझाने पर ज़ोर दिया जाता है। दुख की बात तो यह कि उसी भाव तथा अर्थ को याद करने पर बल दिया जाता है जो अध्यापक ने समझा होता है। इस दुखद सत्य को कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि कुँजियों में दिए गए अर्थ को भी रटने-याद पर बल दिया जाता है। आनंद लेकर कविता को पढ़ना, उसे याद करना, उस पर अभिनय करना, उसमें अपनी तरफ़ से कुछ जोड़ देना यह सब स्वाभाविक बातें कविता शिक्षण से कोसों दूर चली गयी हैं।

कविता पढ़ाई कैसे जाए? यह समझ बनाने से पहले कविता के स्वभाव को जानना ज़रूरी है।

कविता भाषा की भावात्मकता के,अनुभव से लिपटे कलात्मक सौदंर्य की अभिव्यक्ति है। सामान्य से कथन में शब्दों के हेर-फेर से विशेष अर्थगांभीर्य भर देना कविता का रूप धर लेता है। कविता साहित्य की सबसे पुरानी विधा है और बच्चे की भाषिक क्षमता बढ़ाने के लिए कविताओं से उसकी दोस्ती बनी रहे, यह बहुत ज़रूरी है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्त्व है। यह संवेदना संपूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है। कविता का जन्म हुआ तो वाचिक परंपरा के रूप में था पर अब ये लिखित रूप से हमारे पास मौजूद है। सीधे से शब्दों में कहें तो *कविता शब्दों का खेल है।* शब्दों से खेलना, उनसे मेल-जोल बढ़ाना, शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतों को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रस्तुत करना यह सब कविता की दुनिया में प्रवेश कराता है। शब्दों के खेल से शुरू हुई उनकी ही एक रोचक व्यवस्था कब कविता बन जाती है पता ही नहीं चलता और फिर कभी सावन के झूले की तरह आसमान की ऊँचाइयों तक ले जाती है, तो कभी सागर की दुनिया की सैर कराती है, तो कभी झकझोर भी डालती है। यह तो हुआ कविता के संबंध में मन की अभिव्यक्ति अब बात करेंगे कि कविता को कक्षा में बच्चों के सामने प्रस्तुत कैसे करें ताकि वे उसका उतना ही आनंद लें जितना कि पहले लेते रहे हैं। कविता को पढ़ाए जाने के तरीकों के संदर्भ में मेरा जो अनुभव रहा है वह बहुत ही हतोत्साहित करने वाला है। आमतौर पर शिक्षक कविता की शुरुआत आदर्श वाचन से करते हैं और बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे भी उसी तरह से पढ़कर सुनाएँ।

यहीं से आरंभ हो जाती है कविता के प्रति अरुचि की यात्रा। कविता को अपने आप से पढ़े बगैर उसे बोल-बोल कर पढ़कर सुनाना कोई नेक ख्याल तो नहीं लगता। इसके बाद शिक्षक श्यामपट्ट पर कविता में आए कुछ अपरिचित से शब्दों का अर्थ लिखते हैं या फिर मौखिक रूप से बताते हैं। अब वे एक-एक पंक्ति का अर्थ समझाते हैं और फिर अपेक्षा करते हैं कि कक्षा में दो-चार बच्चे उस अर्थ को दोहराएँ। फिर कविता से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं और उम्मीद की जाती है कि बच्चे वही उत्तर दें जो उत्तर अध्यापक के मानसपटल में पैठ चुका है। बच्चे ने अपने अनुभवों के आधार पर जिस अर्थ को गढ़ने का प्रयास किया

है, कक्षा में उसे स्वीकृति नहीं मिलती। स्वाभाविक है कि अपनी-सी लगने वाली कविता परायी-सी लगने लगती है। कविता के प्रति पैदा हुई बेरुखी धीरे-धीरे बढ़ती ही जाती है। कविता पढ़ाने के तरीकों को कुछ अलग तरीके से भी देखा जा सकता है जो इस प्रकार है –

- बच्चों को स्वयं से कविता पढ़ने का अवसर दें। एक बार तो अवश्य, कुछ बच्चे मन-ही-मन पढ़कर खुश होंगे, कुछ बोल-बोल कर पढ़ना चाहेंगे। कविता के प्रति समझ बनाने के ये उनके अपने तरीके हैं। पढ़ते-पढ़ते बच्चे उसमें स्वत: ही लय खोज लेंगे। एक ही बार में पढ़कर भाव और अर्थ समझने का भ्रम पालने से बचें।
- अब कविता के *सस्वर वाचन* की बारी है। बच्चों के सामने अपनी ओर से वाचन प्रस्तुत करें। उच्चारण, लय, ध्वनि का ध्यान रखें पर कदापि यह अपेक्षा न करें कि सभी बच्चे आपके तरीकों को ही अपनाएँ। कम से कम पहली बार तो कदापि नहीं।
- रचनाकार के बारे में थोड़ी-सी बात कविता को आरंभ करने से पहले ज़रूर करें। यह बात सही है कि छोटी कक्षाओं में रचनाकार के बारे में नहीं पूछा जाता पर यह इसलिए ज़रूरी है कि बच्चे रचनाकार का परिचय प्राप्त करें।
  - रचनाकार किस-किस तरह की कविताएँ लिखी हैं, इसकी जानकारी बच्चों को दें।
  - आमतौर पर वह रचनाकार किस तरह की रचनाएँ लिखने के बारे में जाना जाता/जाती है, यह भी बताएँ।
  - प्रस्तुत रचना का संदर्भ बताएँ व बच्चों से बातचीत करें।
- अब आती है अर्थ बताने की बारी। यहाँ पर यह बात गौरतलब है कि किसी भी कविता का कोई एक अर्थ नहीं होता, वह हमारे अनुभवों से जुड़कर नए-नए अर्थ हमें देती है। अर्थ समझने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को कविता के बिंब पर ध्यान देने के लिए कहें। कविता पढ़कर जो बिंब मस्तिष्क में उभर रहे हैं वे अर्थ खोजने में बहुत मदद करेंगे। पहली बार में जिस तरफ़ ध्यान जाए उस अर्थ को भी स्वीकार कर सकते हैं। ध्यान रखें कि कविता को खंडों में रखकर न तो समझें और न ही समझाएँ। उसे समग्र रूप में समझने-समझाने की ज़रूरत है।
- कविता में पिरोए गए दृश्यों, वस्तु या वस्तुओं, घटनाओं और भावनाओं तथा विचारों को इस प्रकार उभारा जाए कि पढ़ने वालों पर उसका प्रभाव पड़े। उसमें व्यक्त की गई भावनाओं और संवेदनाओं को छुएँ।

  कहने का तात्पर्य यह है कि कविता में प्रतिबिंबित चीज़ों, दृश्यों और घटनाओं से गहरे तक जुड़ना होगा। उस जुड़ाव की मन पर जो प्रतिक्रिया होगी, वही कविता का अर्थ हो सकता है। कविता में उभर रहे बिंबों से जुड़ने की प्रक्रिया पढ़ने या सुनने वाले को अपने से जोड़ती है।
- कविता का अर्थ समझने के लिए उसकी इतनी परतें भी न खोली जाएँ कि कविता अमूर्त हो जाए। कविता का अर्थ खोलने का मतलब है उसे और सुंदर बनाना न कि उसकी रचनात्मकता को नष्ट

कर देना। कहने का आशय यह है कि कविता को एक पाठक के रूप में देखें, दार्शनिक, विश्लेषक या चिंतक के रूप में नहीं।

- एक और महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी ज़रूरी है वह यह कि पहले की कविता और आधुनिक कविता दोनों को पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का तरीका भिन्न-भिन्न है। पहले की कविताओं में गेयता का गुण प्रधान होता था जो आधुनिक कविता में नहीं पाया जाता है। यद्यपि आधुनिक कविता में भी लय है, हालाँकि देखने में लगता है कि वह लयविहीन है।
- बच्चों को कक्षा में कविता पढ़ाने से पहले स्वयं बार-बार पढ़ी जाए और इस बात की समझ बनाई जाए कि आधुनिक कविता में नाद सौंदर्य, भाषा, बिंब, प्रतीकों ने किस तरह अपना रूप बदला है। अपनी समझ अच्छी तरह से बने तो कविता कहने के संदर्भ में इस क्रम को अपनाया जा सकता है –
  - सभी बच्चों द्वारा कविता का मौन पठन, छोटे बच्चे मौन रहकर नहीं पढ़ पाते तो उन्हें छूट है कि बोल-बोल कर कविता कहें-पढ़ें।
  - शिक्षक द्वारा कविता का वाचन लय के साथ हो।

    आजकल तो कविता और कहानी के संदर्भ में एक बहुत बड़ी सुविधा उपलब्ध है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली के केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी) द्वारा विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में दी गई कविताओं, कहानियों, एकांकियों की रिकार्डिंग तैयार की गई है। यदि सुविधा है, तो कविता की सी.डी. बच्चों को सुनवाएँ।
- अब आती है संदर्भ की बारी। चूँकि विद्यार्थियों ने भी अपने-अपने स्तर पर कविता समझने का प्रयास किया है, अत: बेहतर तो यही होगा कि पहले उन्हीं से पूछें, अंतत: आप भी संक्षेप में कविता का अर्थ बताएँ।
- संदर्भ के अंतर्गत पूरी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। सार-संक्षेप बताकर प्रसंग की ओर बढ़ें। कविता किस समय का वर्णन करती है, आगे-पीछे के प्रसंगों का जुड़ाव करना न भूलें। यदि उस कविता के संदर्भ में कोई विशेष प्रसंग ढूँढ पाएँ तो अवश्य कहें।
- प्रसंग बताते-बताते कविता की व्याख्या की ओर बढ़ा जा सकता है। ध्यान रहे कि हमें शब्दों की व्याख्या नहीं करनी है। शब्द के भीतर बैठे भाव व अर्थ को श्रोता/पाठक तक पहुँचाना है। व्याख्या कथन की नहीं 'कथ्य'की करनी है। शब्दों का अर्थ या पर्याय रखना कविता की व्याख्या नहीं कहलाएगी।

कविता की व्याख्या के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात और भी है वह यह कि हर पाठक व्याख्या करते समय अपने अनुभवों को उससे जोड़ने का प्रयत्न करेगा। ऐसे में आवश्यक नहीं कि कोई एक सटीक-सा अर्थ निकलकर आए। अत: सभी बच्चों को अर्थ निकालने के संदर्भ में एक ही दिशा की ओर सोचने के लिए किसी भी दृष्टि में उचित एवं स्वीकार्य नहीं होगा।

हमारे देश में भाषा की कक्षाओं की सबसे बड़ी समस्या यही है कि अध्यापक 'एक ही से उत्तर' की

अपेक्षा करते हैं। कुछ संदर्भों में तो यह बात जायज़ है जैसे कि ''यह छंद है या सवैया'', ''इसमें उपमा है या रूपक'', ''इसमें कितनी मात्राएँ हैं'' आदि-आदि। पर जहाँ तक भाव समझने की बात है तो हर बच्चे को स्वतंत्रता होनी ज़रूरी है कि वह अपने अनुभव को जोड़कर अपने परिप्रेक्ष्य के आधार पर व्याख्या ढूँढने की कोशिश करे।

- व्याख्या की बात, बच्चों का ध्यान 'विशेष' की ओर ले जाएँ जैसे –
  - भाषा कैसी है?
  - कहाँ-कहाँ किस प्रकार से शाब्दिक चमत्कार पैदा किया गया है?
  - प्रतीकात्मकता का इस्तेमाल कैसे किया गया है?
  - यदि कहीं कोष्ठक आदि का उपयोग है तो वह क्यों किया गया है?
  - कविता के मूल भाव को अवश्य बताएँ

अब कुछ विशेष

- अब तक जो बात की गई वह तो होना ही चाहिए। इसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी बातें हैं जिनके बारे में प्रयास किया जा सकता है –
  - यदि कवि जीवित है और अपने नगर में ही है तो बच्चों से उसकी मुलाकात का आयोजन किया जा सकता है।
  - बहुत से कवियों के साक्षात्कार भी समय-समय पर आकाशवाणी, ज्ञान दर्शन द्वारा प्रसारित किए जाते हैं, उनकी सी.डी. भी उपलब्ध हैं, उन्हें सुनवाने के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़े तो अवश्य करें।
  - कवि से तादात्मय स्थापित करने के लिए कवि के बारे में कुछ रोचक बातें बताएँ। उनसे जुड़े प्रसंगों, रोचक घटनाओं का संग्रह करने के लिए बच्चों को कहें।
  - कविता के बारे में कभी कोई लेख आया है, या कभी अखबार में कोई खबर छपी है या उसे किसी फिल्म में लिया गया है तो इस तरह की जानकारी भी कक्षा में साझा करें।
  - जो कविता कक्षा में पढ़ाई जा रही है, उसके विषय से जुड़ी और भी कविताएँ अवश्य होंगी उन कविताओं की ओर संकेत करें। श्रेयस्कर तो यह होगा कि समूह कार्य द्वारा एक ही कथ्य/विषय पर आधारित कविताओं का संग्रह करवाएँ।
  - उदाहरण के तौर पर, आप कक्षा-4 की रिमझिम में दी गई पहली कविता 'मन के भोले-भाले बादल' पर बात कर रहे हैं। बादलों पर और भी बहुत-सी कविताएँ होंगी और कहानियाँ तो हैं ही, कक्षा में इनका ज़िक्र किया जाना चाहिए और इनका संग्रह भी करवाएँ।
  - कविता को कहानी में कैसे कहा या ढाला जाए, इस तरह की कोशिश भी की जाए तो भाषिक क्षमताओं के विकास का फलक और भी बढ़ेगा।
  - बच्चों से भी तरह-तरह की तुकबंदियाँ करवाएँ, अपने स्तर पर कविता बनाने को प्रेरित करें।
  - पिछली कक्षा में पढ़ी गई उसी प्रकृति की कविता का भी ज़िक्र करें।

- कई कविताएँ ऐसी होती हैं जिनका मूल आशय पाठ में आए शब्दों से परे कहीं गहरे में छिपा होता है। ऐसी कविताओं के मूल आशय से बच्चों को अवगत कराना ज़रूरी है।
- आस-पास घट रही घटनाएँ या मौसम आदि कविता में अपनी झलक दिखला रहे हैं तो उस ओर संकेत ज़रूर जाना चाहिए।
- बच्चों को कविता समझाते समय वातावरण को सजीव व रूचिपूर्ण बनाना अनिवार्य है।

❑❑❑

भाषा-शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षा होती हैं। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। कुछ विषयों को लेकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे अलग-अलग पुस्तकों का अध्ययन करें या उन भाषाओं में लोगों से बातचीत करें, इंटरनेट से अंग्रेज़ी में सामग्री एकत्रित करें। भाषा को लेकर पाठ्यचर्या में ऐसी नीति अपनाने से स्कूल में बहुभाषिकता को बढ़ावा मिलेगा।

– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (पृष्ठ 23)